प्रेस विज्ञप्ति

किंग जार्ज चिकित्सा विश्वविद्यालय के कलॉम सेंटर में आज दिनांक 02 फरवरी, 2018 को "Screening, Monitoring & Diagnosis of Human Papilloma Virus (HPV)" पर Knowledge based seminar का आयोजन किया गया।

कार्यक्रम में मॉलिक्यूलर बायोलॉजी इकाई, सेंटर फॉर एडवासं रिसर्च की सह–आचार्या डॉ0 नीतू सिंह ने बताया कि 30 से 65 वर्ष की उम्र की महिलाओं में सर्वाइकल कैंसर की समस्या होती है। इसकी रोकथाम और इसकी पहचान के लिए भारत सरकार द्वारा एन0एच0एम0 के अंतर्गत 30 से 65 वर्ष की उम्र की महिलाओं का विश्व स्वास्थ्य संगठन के मानकों के अनुसार VIA की जांच की जा रही है। WHO द्वारा विकासशिल देशों की महिलाओं में सर्विक्स के कैंसर की जल्द पहचान के लिए VIA जांच का मानक रखा गया है। जिन महिलाओं का VIA टेस्ट पॉजिटिव आता है उन महिलाओं का Digene HPV test कराया जाता है। किन्तु कुछ केसों में VIA जांच द्वारा एचपीवी वायरस का पता नही चल पाता है ऐसी परिस्थितियों में Digene HPV test (USA- Food & Drug Administration approved kit) के माध्यम से एचपीवी वायरस का पता लागया जाता है। इसलिए सर्विक्स के कैंसर के मुख्य कारण एचपीवी वायरस की जल्द पहचान के लिए डाइजीन एचपीवी टेस्ट का होना जरूरी है। जिससे मरीजो में एचपीवी वारस की वहज से सेल्स में बदलाव आदि को जल्द से जल्द पहचाना जा सके और ऐसे मरीजों का इलाज कर उनके जीवन को बचाया जा सके। 30 वर्ष की उम्र पार कर चुकी किसी महिला का डाइजीन एचपीवी टेस्ट कराया जाता है और उसका टेस्ट निगेटिव निकलता है तो ऐसी महिलाओं को दुबारा तीन वर्ष के पश्चात डाइजीन एचपीवी टेस्ट कराते रहाना चाहिए। इसमे यह बात ध्यान देने वाली है कि प्रत्येक एचपीवी पॉजिटिव महिला में सर्विक्स का कैंसर नही होता है, इस वायरस से पॉजिटिव कुछ महिलाओं में यह वायरस शुशुप्तावस्था में पड़ रहता है यह उस महिला में इस वायरस की प्रति रोग प्रतिरोधक क्षमता पर निर्भर करता है कि उसको इस वायरस की वजह से कोई परेशानी होगी की नही। अगर ऐसी किसी महिला जिसमे एचपीवी वायरस पॉजिटिव पाया जाता है तो उसे Colposcopy के साथ हर 6 माह पर चिकित्सकीय सलाह लेना चाहिए। कुछ केसो में VIA test निगेटिव आने पर भी Digene HPV test पॉजिटिव आता हैं। यह जांच वीआईए से ज्यादा प्रभावशाली है। सवाईकल कैंसर से बचाव के लिए 30 वर्ष की उम्र पार कर चुकी महिलाओं में यह टेस्ट अति आवश्यक है। चिकित्सा विश्वविद्यालय के स्त्रि प्रसूति रोग विभाग में इसकी जांच के लिए प्रो0 अमिता पाण्डेय की देख रेख में एक कलेक्शन सेंटर खोला जा रहा है और इसकी जांच मालिक्यूलर बायोलॉजी इकाई, सेंटर फॉर एडवांस रिसर्च में माइक्रोबॉयोलॉजी विभाग की विभागाध्यक्षा प्रो0 अमिता जैन के दिशा निर्देश में की जाएगी। हम लोग इस जांच को प्रदेश के विभिन्न जिला अस्पतालों से लेकर ग्राम स्तर तक ले जाने के लिए प्रयत्नशील है। जिससे ज्यादा से ज्यादा सर्विक्स कैंसर को होने से रोका जा सके। इस जांच से एचपीवी वायरस का पता लग जाने के उपरांत मरीज के सेल्स में परिवर्तन शुरू होने के शुरूआती दौर में ही उसका उपचार शुरू कर दिया जाता हैं, जिससे मरीज को जल्द इस बिमारी से निदान दिलाने में मदद मिलती है। अभी इसकी जांच

चिकित्सा विश्वविद्यालय के स्त्री एवं प्रसूति रोग विभाग में छोटे स्तर पर शुरू की जा रही है जिसमे कायजीन से सहयोग प्रदान करने के लिए कहा गया है।

कार्यक्रम में चिकित्सा विश्वविद्यालय के मा0 कुलपति प्रो0 मदनलाल ब्रह्म भट्ट जी ने कहा कि यह एक बहुत ही महत्वपूर्ण कार्य है। किसी भी तरह के कैंसर की संभावना को पहले से पहचान लेने पर उसके इलाज में काफी सहुलियत रहती है और मरीज में कैंसर को पनपने से पहले रोका भी जा सकता है। इस लिहाजा यह कार्यक्रम बहुत ही आवश्यक है। इसकी प्रारंभीक जांच स्त्री एवं प्रसूति रोग विभाग में 30 वर्ष के ऊपर आने वाली महिलाओं में शुरू करना है इसके लिए हमे महिलाओं को जागरूक करना पड़ेगा की वो इस जांच को कराएं और सर्विक्स के कैंसर को पनपने से पहले रोकें।

(प्रो0 नरसिंह वर्मा)
संकाय प्रभारी,
मीडिया सेल, केजीएमयू

(प्रो0 विभा सिंह)
संकाय प्रभारी,
मीडिया सेल, केजीएमयू

(डॉ0 सुधीर सिंह)
सह–संकाय प्रभारी,
मीडिया सेल, केजीएमयू